



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

डॉ. गोरखनाथ किसन किर्दत

सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, उरुण-ईश्वरपुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130310

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume – 13

Issue – 3

January – February 2026

Pp. 45 – 48

Submitted: 17 Jan.2026

Revised: 23 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. गोरखनाथ किसन किर्दत

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22774702

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22774702>



Creative Commons



सार:

21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में पारिवारिक समस्याओं को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। पारंपरिक संयुक्त परिवार की कहानियों से आगे बढ़कर अब फिल्मों में पीढ़ीगत संघर्ष, आर्थिक दबाव, महिला सशक्तिकरण और बदलते सामाजिक मूल्यों को केंद्र में रखा गया है। पहले की फिल्मों में संयुक्त परिवार की परंपराएँ और उनके भीतर के संघर्ष दिखाए जाते थे। अब शहरीकरण और प्रवास के कारण एकल परिवार की चुनौतियाँ जैसे अकेलापन, रिश्तों में दूरी और बच्चों की परवरिश पर ध्यान दिया जाता है। नई सदी की फिल्मों में माता-पिता और बच्चों के बीच विचारों का टकराव प्रमुख विषय है। यह फिल्में बुजुर्ग माता-पिता और उनके बच्चों के बीच रिश्तों की जटिलताओं को उजागर करती हैं।

मुख्य शब्द: किरदार, परवरिश, एकल, बुजुर्ग, बागबान

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. गोरखनाथ किसन किर्दत. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 45 – 48. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22774702>

सिनेमा को समाज का आईना कहा जाता है। इस आईने में देखने के बाद हमें हमारी और समाज की हकीकत पता चलती है। सिनेमा समाज को प्रभावित करता है। फिल्में लोग मनोरंजन के लिए भले ही देखते हैं, लेकिन उससे प्रभावित भी होते हैं। फिल्में हमें जागरूक भी करती हैं। कई सामाजिक

मुद्दों और समस्याओं पर बनने वाली फिल्मों जैसे कि 'मदर इंडिया', 'प्रेम रोग', 'मंथन', 'डोर', 'अर्थ', 'तारे जमीन पर', 'आर्टिकल 15', 'हिंदी मीडियम', 'पीपली लाइव', 'पैडमैन', 'टॉयलेट एक प्रेमकथा', 'छपाक', 'थप्पड़' और 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' ने लोगों पर गहरा प्रभाव डाला है। "बागबान"



(2003) और "कपूर एंड सन्स" (2016) जैसी फिल्मों ने बुजुर्गों की उपेक्षा और भाई-बहनों के बीच असमानता को उजागर किया है। "क्वीन" (2014) और "थप्पड़" (2020) जैसी फिल्मों ने दिखाया कि परिवार में महिलाओं की भूमिका अब केवल गृहिणी तक सीमित नहीं है। वे अपने अधिकार और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती हैं। "दो दूनी चार" (2010) और "पैडमेन" (2018) जैसी फिल्मों ने दिखाया कि आर्थिक असमानता और सामाजिक दबाव परिवार के भीतर तनाव पैदा करते हैं।

ऐसी ही एक फिल्म साल 2003 में रिलीज हुई थी, जिसका नाम 'बागबान' है। रवि चोपड़ा के निर्देशन में बनी फिल्म 'बागबान' में अमिताभ बच्चन, हेमा मालिनी, सलमान खान, महिमा चौधरी, अमन वर्मा और समीर सोनी अहम भूमिका में हैं। फिल्म की कहानी एक बुजुर्ग कपल की जिंदगी पर आधारित है। जिनके चार बच्चे होते हैं। अपने बच्चों की परवरिश और उनकी जरूरतों को पूरा करने में इस कपल की सारी जमापूंजी खर्च हो जाती है। यहां तक कि बैंक से लोन भी लेना पड़ता है। रिटायरमेंट के बाद माता-पिता अपने बच्चों के साथ रहना चाहते हैं। लेकिन सभी बच्चे अपनी मजबूरियाँ बताकर दोनों को एक साथ रखने से इंकार कर देते हैं। बाद में तय होता है कि माता-पिता अलग-अलग बच्चों के साथ 6-6 महीने के लिए रहेंगे।

इस तरह उम्र के आखिरी पड़ाव में ये कपल अलग हो जाता है। इसके बाद कई नाटकीय घटनाक्रम के बाद दोनों एक-दूसरे से मिलते हैं। उनका जीवन पूरी तरह से बदल जाता है। फिल्म में अमिताभ बच्चन ने पिता राज मल्होत्रा, हेमा मालिनी ने माँ पूजा मल्होत्रा, अमन वर्मा ने बड़े बेटे अजय, समीर सोनी ने दूसरे बेटे संजय, साहिल चड्ढा ने तीसरे बेटे रोहित, नसीर खान ने चौथे बेटे करन, सलमान खान ने दत्तक पुत्र आलोक मल्होत्रा और महिमा चौधरी ने अर्पिता की भूमिका निभाई है।

अब पारिवारिक मुद्दों को केवल भावनात्मक नहीं बल्कि सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों से भी जोड़ा जा रहा है। फिल्म बागबान एक भावनात्मक पारिवारिक ड्रामा है, जो बुजुर्ग माता-पिता और उनके बच्चों के बीच रिश्तों की जटिलताओं को उजागर करती है। यह कहानी आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह बुजुर्गों की उपेक्षा और पारिवारिक जिम्मेदारियों पर गहरी बहस छेड़ती है।

हर माता-पिता अपनी क्षमतानुसार अपने बच्चों की परवरिश करते हैं। उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और मूलभूत सुविधाओं का ध्यान रखते हैं। इस फिल्म में राज और पूजा अपने चारों बच्चों के लिए सबकुछ करते हैं। लेकिन बच्चे उनके बुजुर्ग होने के बाद उनसे मुंह फेर लेते हैं। उनको बोझ समझने लगते हैं, लेकिन बाद में राज जब अपनी किताब की वजह से मशहूर और पैसे वाले हो जाते हैं, तो वही बच्चे उनके पास वापस आने की कोशिश करते हैं। परंतु अपने बच्चों से कष्ट झेल चुके राज और पूजा उनसे मुंह फेर लेते हैं।

भारतीय समाज में परिवार का हमेशा से महत्व रहा है। संयुक्त हो या एकल परिवार, ज्यादातर माँ-बाप बच्चों की परवरिश के लिए अपना सबकुछ लगाने के लिए तैयार रहते हैं। फिल्म 'बागबान' में भी राज मल्होत्रा अपने बच्चों की परवरिश और पढ़ाई में अपना सारा पैसा लगा देते हैं। उनकी पत्नी पूजा एक बार आर्थिक स्थिति के बारे में पूछती भी है, तो राज कहते हैं, "हमारे बच्चे चार-चार फिक्स्ड डिपॉजिट हैं।"¹ रिटायरमेंट के बाद एक्सपेंशन का ऑफर मिलने के बाद भी उसे स्वीकार नहीं करते। उनको लगता है कि उनके बच्चे उनकी देखभाल कर लेंगे। लेकिन ऐसा होता नहीं है। जब वो अपने बच्चों से अपने मन की बात बताते हैं तो वो उन्हें एक साथ रखने से इनकार कर देते हैं। राज के पैरों तले की जमीन खिसक जाती है और उनके दिल को गहरी ठेस पहुँचती है। इस फिल्म से सीख



मिलती है कि हर व्यक्ति को अपने बुढ़ापे के लिए पैसा जरूर बचना चाहिए।

समाज एवं घर-परिवार में अक्सर खून के रिश्तों की बात कही जाती है। ज्यादातर लोगों का मानना है कि खून से बने रिश्ते ज्यादा मजबूत होते हैं। लेकिन यह सौ प्रतिशत सच नहीं है। फिल्म 'बागबान' में अपने ही बेटे माता-पिता को धोखा देते हैं। उनके लिए माँ-बाप से ज्यादा उनका अपना परिवार महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसे में राज मल्होत्रा का दत्तक पुत्र आकाश मल्होत्रा उनका सहारा बनता है। आकाश अनाथ होता है, जिसे राज मंदिर के बाहर उठाकर पढ़ाते हैं और विदेश भेजते हैं। राज और पूजा को बुरे हाल में देखकर आकाश रोने लगता है। वह उन्हें अपने घर लाता है, भगवान की तरह उनकी पूजा करता है यहां तक कि राज की पसंदीदा कार भी गिफ्ट करता है। आकाश का किरदार साबित करता है कि रिश्ते सिर्फ खून से नहीं बनते हैं।

'बागबान' सिर्फ एक फिल्म नहीं बल्कि सामाजिक संदेश है। जो हमें याद दिलाती है कि माता-पिता का प्यार और त्याग कभी भुलाया नहीं जाना चाहिए। हालांकि इसकी प्रस्तुति कभी-कभी अतिरंजित लग सकती है, लेकिन इसका भावनात्मक असर आज भी उतना ही गहरा है। फिल्म में बेटे अपने जनमदाता माँ-बाप को उनके हाल पर छोड़ देते हैं। ऐसा लंबे समय से हो रहा है। लेकिन इस फिल्म को देखने के बाद लोगों को रिश्तों की अलग-अलग परिभाषा समझ में आती है।

"कपूर एंड संस" (2016) एक संवेदनशील पारिवारिक फिल्म है। जो हंसी और भावनाओं के बीच संतुलन बनाते हुए एक असली और दिल को छू लेने वाली कहानी प्रस्तुत करता है। यह फिल्म दर्शकों को परिवार की जटिलताओं, रिश्तों की दरारों और छिपे हुए सच के बीच

झांकने का मौका देती है। फिल्म चार दीवारी के अंदर बिखरे हुए घर को दिखाती है, जहां सबका दम घुट-सा रहा है।

निर्देशक शकुन बत्रा की फिल्म परिवार के अंदर चलने वाले रिश्तों की कश्मकश को दिखाती है। पति-पत्नी से लेकर बेटों का आपसी तनाव, बच्चों के साथ माँ-बाप के रिश्ते, दादा के साथ पोतों का रिश्ता। यहां कुछ दिल को छूने वाले चित्र सामने आते हैं। अमूमन परिवार में बड़ा बेटा खास माना जाता है तो छोटे को लगातार खुद को साबित करने के लिए कुछ विशेष करने की जरूरत महसूस होती है। यहां भी बड़ा (फवाद खान) कामयाब राइटर है और छोटा (सिद्धार्थ मल्होत्रा) जिंदगी में संघर्ष कर रहा है। 90 साल के दादू (ऋषि कपूर) के वहां भी यही हाल है। वह बेटे-बहू (रजत कपूर-रत्ना पाठक शाह) के साथ रहते हैं। जिनके दोनों बच्चे ब्रिटेन और अमेरिका में हैं। बार-बार मरने की प्रेक्टिस करते दादू का एक ही ख्वाब है। पूरे परिवार के साथ बढ़िया तस्वीर खिंचाएं और दीवार पर टांग कर निहारते रहें। तस्वीर के नीचे लिखा होगा- 'कपूर एंड संस सिंस 1921'।

'कपूर एंड संस' आखिरी कुछ मिनटों को छोड़ पारिवारिक टेंशन ज्यादा और इमोशन कम दिखाती है। रजत कपूर और रत्ना पाठक शाह तनाव के पलों को बेहतरीन ढंग से उभारने में सफल हैं। फवाद खान प्रभाव छोड़ते हैं। उनमें अच्छे अभिनेता वाली बात नजर आती है। ऋषि कपूर सबसे ज्यादा याद रहते हैं।

लेखक निर्देशक हबीब फैजल की 'दो दुनी चार' दिल्ली के लाजपत नगर में रहने वाले एक मिडिल क्लास परिवार के खट्टे मीठे अनुभवों की कहानी है। इस परिवार को जिंदगी से थोड़ी ज्यादा ही उम्मीदें हैं। संतोष दुग्गल यानी ऋषि कपूर एक टीचर हैं जो अपनी मामूली सी तनख्वाह में बड़ी ही मुश्किल से अपने परिवार का गुजारा करते हैं। वो अपने परिवार



की खुशी के लिए लंबे समय तक काम करते हैं और प्राइवेट कोचिंग क्लास भी लेते हैं ताकि उनका परिवार डिनर में कभी कभार चिकन का मजा भी ले सके और उनकी बेटी को कॉलेज के साथ साथ कॉल सेंटर में जॉब भी न करनी पड़े। उनकी समझदार पत्नी के रोल में हैं उनकी रियल लाइफ पत्नी नीतू सिंह जो घर में पैसों की तंगी को बखूबी समझती हैं और अपने पति से फ्रिज की डिमांड इसलिए नहीं करती क्योंकि उन पैसे से उन्हें अपने रिश्तेदार को गिफ्ट देना है।

मि. दुग्गल के बच्चे इन परेशानियों को कम समझते हैं। जहां उनकी बेटी को किसी भी हालत में आई पॉड चाहिए वहीं उनका बेटा क्रिकेट में स्ट्रेबाजी करके चोरी छुपे पैसे कमाता है और बाप के बारे में जरा भी नहीं सोचता। ये दोनों बच्चे अपने परिवार की सीधी-साधी जिंदगी को लेकर शर्मिंदा हैं और तब मि. दुग्गल कार लेने का मन बनाते हैं पर वो कार के डाउनपेमेंट के लिए भी पैसे नहीं जुटा पाते। ये फिल्म दिल को छूने वाली एक ऐसी कहानी है जिसे हर कोई रिलेट कर सकता है।

"दो दूनी चार" सिर्फ एक फिल्म नहीं बल्कि मध्यमवर्गीय जीवन की कहानी है। इसमें हंसी भी है, संघर्ष भी और उम्मीद भी। यह फिल्म दर्शकों को अपने परिवार और जीवन की छोटी-छोटी खुशियों की अहमियत याद दिलाती है। फिल्म दिल्ली के लाजपत नगर में रहने वाले एक मिडिल क्लास परिवार की कहानी है। संतोष दुग्गल (ऋषि कपूर) एक

स्कूल टीचर हैं, जो अपनी मामूली तनख्वाह में परिवार की जरूरतें पूरी करने की कोशिश करते हैं। परिवार का सपना है कि उनके पास भी एक कार हो, ताकि वे समाज में इज्जत पा सकें। इस संघर्ष में हंसी, उदासी और भावनाओं का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सिनेमा आज के दौर का एक महत्वपूर्ण कला माध्यम है और इस कला माध्यम का समाज के साथ गहरा संबंध है। मानव सभ्यता के विकास के साथ कलारूपों का भी विकास होता रहा है। सिनेमा कई कलाओं की समुचित विधा है। नृत्य, गीत, संगीत, अभिनय, चित्रकला सभी कलाएँ इसमें समाहित हैं, इसीलिए सिनेमा आम जनता से आसानी से संवाद करने में सफल हुआ। नई सदी की फिल्मों में माता-पिता और बच्चों के बीच विचारों का टकराव प्रमुख विषय है। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आने वाली फिल्मों और वेब सीरीज ने पारिवारिक समस्याओं को और गहराई से दिखाया है।

संदर्भ सूची:

1. <https://www.aajtak.in/opinion-analysis-/story/bagbhan>
2. <https://www.amarujala.com/entertainment/movie-review>